हेगेल

प्रमुख रचना -

Phenomenology of Spirit

Science of logic

* हेगेल कांट के व्यवहार और परमार्थ (Phenomena and Noumena) का स्वीकार नहीं किया है।

* कांट के इन्द्रियानुभव संवेदना और बुद्धि-विकल्प के द्वैत को भी नहीं माना है।

* कांट के 'अज्ञेय' को भी हेगेल नहीं मानते; हेगेल के अनुसार अज्ञेय कुछ भी नहीं है।

* हेगेल के अनुसार ~~तर्क~~ तर्कशास्त्र (Logic) और दर्शनशास्त्र (Metaphysics) दोनों एक ही है।

* परम तत्व निरपेक्ष विज्ञानरूप या शुद्ध-चैतन्यरूप है। विज्ञान एकमात्र सत्ता है। जिसे हम बाह्य जगत कहते हैं, वह भी विज्ञान का ही परिणाम है।

* विज्ञान ही मूर्त और वास्तविक (Concrete and Real) है।

* निरपेक्ष सत्ता (Absolute Idea) ही एक मात्र सत्ता है और सम्पूर्ण विश्व इसी का परिणाम है।

* हेगेल की प्रसिद्ध उक्ति -
"जो चित है वही सत् है और जो सत् है वही चित है अथवा बोध ही सत्ता है और सत्ता ही बोध है।"
(Real is rational and rational is real)

* हेगेल - विशिष्टाद्वैत के मत से सहमत है।

* हेगेल के अनुसार निषेध (Negation)(contradiction) "अखिल विश्व का प्राण" है।

[illegible]

- हेगेल के अनुसार विज्ञान का विकास क्रम त्रिक में होता है। ये तीन रूप हैं —
  पक्ष (Thesis)
  प्रतिपक्ष (Antithesis)
  समन्वय (Synthesis) } इसी त्रिक को द्वन्द्वात्मक तर्क कहते

Negation is determination — Hegal
Determination is negation — Spinoza
Negation of negation — Marx

- सत्ता, असत्ता तथा निषेधक

हेगेल की प्रसिद्ध उक्ति है : शुद्ध सत् शुद्ध असत् है अर्थात् शुद्ध सत् और शुद्ध शून्य में कोई भेद नहीं, क्योंकि दोनों निर्विशेष हैं।

I अस्ति / सत्ता (Being) पक्ष है
II नास्ति / असत्ता (Non-Being) प्रतिपक्ष है
दोनों अपूर्ण हैं। दोनों का विरोध मिटाने के लिए इनका समन्वय आवश्यक है
III समन्वय- परिणति (Becoming) है।

आत्मा की अवधारणा

→ हेगेल के अनुसार आत्म विज्ञान समन्वय है परम मानव जगत् है।
समन्वय का क्रम पक्ष, प्रतिपक्ष से समन्वय की अवस्था तक जाता है।